

हिरना सावरी - एक नारी दस्तावेज

डॉ. मा. ना. गायकवाड

हिंदी विभाग

कै. व्यंकटराव देशमुख महाविद्यालय, बाभळगाव

ता. जि. लातूर, महाराष्ट्र

drmana358@gmail.com

‘हिरना सावरी’ यह मनहर चौहान की

आत्मकथात्मक शैली में लिखा हुआ आंचलिक उपन्यास है। छत्तीसगढ़ के जीवन पर आधारित यह एक सुंदर कृति है। उपन्यास में छत्तीसगढ़ के रंग और दर्द की यह कहानी हिरना उर्फ लछमी की जबानी कही गई है। उपन्यास के केंद्र में ग्राम करतरा और एक ग्वाला परिवार है। कथा में उतार चढ़ाव आता है। दाऊ दुःखमोचन सिंह की दानीपुर के मुरारीदाऊ की प्रतिवृद्धिता से और दाऊ दुःखमोचन सिंह की पराजय के साथ हिरना के परिवार की नौकरी भी छुट जाती है। और उसे रोजी-रोटी की तलाश में गांव छोड़कर भागना पड़ता है। उसके पश्चात दानीपुर गांव में दरिद्रता संघर्ष और घुटन की कहानी आरंभ होती है। इस प्रकार कथा का प्रारंभ करतरा गांव से होता है और समाप्ति दानीपुर में होती है। उपन्यास में से छत्तीसगढ़ी शब्द निकाल दिए जाए तो वह छत्तीसगढ़ विषयक नहीं रह जाएगा। इस आलोचना का लेखक ने उत्तर दिया है कि, *“छत्तीसगढ़ में अशिक्षा, अंधविश्वास, धन का असंतुलित विभाजन तथा नारी शरीर की सहज सुलभता है और साथ-साथ है गांवों का शहरों से संघर्ष बेकारी के कारण गांव टूटकर रहे और शहरों में खुली गंदगी है। हिरना सावरी के सभी पात्र इसी के प्रतीक हैं।”* ०१

उपन्यास के केंद्र में ग्राम करतरा और एक ग्वाला परिवार है। कथा में उतार-चढ़ाव आता है। दाऊ दुःखमोचन सिंह की दानीपुरके मुरारी दाऊ की प्रतिवृद्धिता से और दाऊ दुःखमोचन की पराजय के साथ हिरना के परिवार की नौकरी भी छुट जाती है और उसे रोजी रोटी के तलाश में गांव छोड़कर भागना पड़ता है। उसके पश्चात

दानीपुर गांव में दरिद्रता, संघर्ष और घुटन की कहानी आरंभ होती है। इस प्रकार कथा का प्रारंभ करतरा गांव से होता है और समाप्ति दानीपुर में होती है।

करतरा गांव में कल्याण भवन ही एक मात्र हवेली है बाकी सभी लोग अपनी छोटी-छोटी झोपड़ियों में अपने अपने सुख दुःख के साथ रहते हैं। ये झोपड़े इतने छोटे हैं कि इनकी छतों को हाथ उपर करके छआ जा सकता है। दाऊ दुःखमोचन सिंह ने करतरा गांव को खरीदा था, तब यह बस्ती और भी छोटी थी। दाऊ दुःखमोचन सिंह के साथ ही हिरना का परिवार इस गांव में आया था। यह परिवार ग्वाला परिवार था जो पीड़ी-दर-पीड़ी दाऊ दुःखमोचन के ढोर चराना चला आ रहा था। परिवार का बड़ा लड़का दाऊ का ग्वाला बन जाता था और छोटे लड़के कहीं अहीरी तलाश करते।

गांव से दो मील दूरीपर बाबा सिध्दनाथ का मंदिर था। मंदिर के चारों ओर दूर-दूर तक खेतों का लहरिया फैलाव था। लोगों का विश्वास था कि, सिध्दनाथ बाबा लोगों की कामनापूरी करते हैं। सिध्दनाथ बाबा की मनौती करने से ही हिरना का जन्म हुआ था। वह अपने माँ-बाप को इकलौती बेटी थी। माँ का नाम रामकली और बाप का नाम रामरास था। हिरना उन्हें दादी और दादा कहा करती थी। हिरना का वास्तविक नाम लछमी था, सभी उसे हिरना कहते थे। हिरना चौदह साला की हुई पर अभी तक उसकी शादी नहीं हुई थी। गांव में तो पालने में ही लड़के - लड़कियों की शादी की परंपरा होती है। लेकिन पंद्रह सोलह साल की उम्र की लड़कियों की संख्या भी गांव में कम न थी। इसका एक कारण तो यह था कि शहर में पढ़ने वाले लड़के तथा रिश्तेदार बाल-विवाह का विरोध करते थे। दूसरे लड़कियों के माँ-बाप दहेज न जुटा पाते थे, इस कारण भी लड़कियों बड़ी उम्र तक कुआंरी रह जाती थी। वैसे गांव में

शादी के बारे में काफी आजादी थी। यहाँ *“लडकी का पसंद के लडके के साथ भाग जाना बहुत मामुली बात न थी लेकिन बहुत बड़ी बात भी न थी।..... कुछ साहसी जोड़े खुले आम प्यार करते और बिना किसी ढोल-ढमाके के युवती युवक के घर बैठ जाती।”*^{०२} यह सही है कि, ऐसे लोगों का गांव में मान पहले जैसा नहीं रहता था।

हिरना के परिवार की गरीबी किसी से छिपी नहीं थी, फिर भी गांव के इज्जतदार और ईमानदार परिवारों में इस परिवार की गिनती होती थी। न गरीबी के कारण ही हिरना की शादी अब तक नहीं हो पाई थी। उसके दादा अपनी इकलौती बेटी बिना दहेज के ब्याहे यह नहीं चाहते थे और उनकी शर्त यह थी कि लडके को घर जमाई बनकर रहना होगा। इन्हीं कारणों से हिरना अब तक अनब्याही रह गई थी। दाऊ दुखमोचन सिंह ने करतरा गांव को जब खरीदा था, तब गांव बहुत छोटा था और उनका कल्याण भवन ही गांव में एकमात्र हवेली थी। कल्याण भवन चारों ओर से फुलवारी से घिरा हुआ था। लेकिन तब दाऊ जवान थे और उनकी हर मौज जवान थी। उन दिनों हवेली के पिछवाड़े में गोशाला थी जहाँ दो दर्जन गायें और उतनी ही भैंसे थी। दूध-दही की नदियाँ बहती थी। *“दाऊ जिनपर मेहरबान हो जाते उनमें मुफ्त दूध घी बंटा करता।”*^{०३} समय बीतता गया दूध - घी की नदियाँ सूख गई। दाऊ की जमींदारी चली गई। जमींदारी खत्म हो गई पर दाऊ की ऐयाशी आदते कम नहीं हुई। दाऊ शराब खोरी और नाचनेवालों के पीछे दीवाने थे। नाचनेवालों को वे मुंहमांगा इनाम देते थे। धीरे-धीरे खजाना खाली होता गया, जी हुजूरियें भी खजाने में लूट मचाते थे। आखिर एक दिन उन्हें फुलवारी बेचनी पड़ी। लोगों ने समझ लिया कि दाऊ गरीब होते जा रहे हैं।

दाऊ दुखमोचन सिंह जितने उदार थे उतने ही बेरहम भी थे। *“जिस पर खुश हो गए, मालामाल कर दिया, जिस पर नाराज हो गए, जड़ खोदकर मठा डाल दिया। उनके सताए लोगों की संख्या बहुत थी।”*^{०४} इसी कारण दाऊ के पतन से ये लोग बहुत खुश थे। गोशाला के बहुत से ढोर भी बीमारी से मर गए थे। अब गोशाला में केवल तीन गाएँ और दो भैंसे थी। रस्सी जल गई थी पर ऐंठन नहीं गई थी। इसी लिए रामदरस अभी तक उनका ग्वाला बना हुआ था। करतरा गांव से चालीस मील की दूरी पर दानीपूर की

अनाज मंडी थी। मुरारी दाऊ वहाँ के जमींदार थे। दानीपुर के अलावा निमतारा में भी उनकी बहुत बड़ी हवेली थी। उनकी हवेली कल्याण भवन से छोटी थी पर साफ सुथरी थी और उनके पास पैसा भी बहुत अधिक था। विशेष बात यह कि वे दाऊ दुखमोचन सिंह की तरह ऐयाश नहीं थे। परंतु दाऊ दुखमोचन सिंह अपने खोखले पर के बावजूद इस बात को नहीं मानते थे। वे तो अपने आपको मुरारी दाऊ से ऊँचा या कम-से-कम बराबर दिखाने के लिए जी रहे थे।

मुरारी दाऊ के अपने ग्वाले को नौकरी से हटाते ही दाऊ दुखमोचन सिंह ने भी अपने ग्वाले को हटा दिया। नौकरी से हटाते समय उन्होंने इतनी दया दिखाई कि रामदरस को डेढ़ सौ रुपये, दो साड़ियाँ और एक धोती सौगात में दी। रामदरस पिछले कई दिनों से यह नौकरी छोड़कर कोई धंधा करना चाह रहा था। परंतु दाऊ के भय से वह साहस नहीं कर सकता था। उसने दो सौ रुपये इकट्ठा किए थे और दाऊ से डेढ़ सौ मिलाकर वह धंधा करने की सोचने लगा। फिर इस परिवार ने फैसला किया कि गांव छोड़कर किसी दूसरे गांव में धंधा करेंगे। काफी सोच-विचार के बाद उन्होंने दानीपुर जाने का निर्णय लिया, क्योंकि उनके मन में कहीं विश्वास था कि मुरारी दाऊ कोई मदद कर सकेंगे। करतरा छोड़कर हिरना का परिवार दानीपुर पहुंचता है। मुरारी दाऊ के प्रयत्नों से ही एक कमरा किराए पर मिला तथा एक बीड़ी कारखाने में नौकरी भी मिली। धंधा करने का साहस नहीं दिखा पाया। धंधे के बिना धनवान बनना, जिसके सपने वह देखा करता था, संभव नहीं था और अच्छा घरजंवाई मिलना भी असंभव था। रोज के मिलने वाले दो-ढाई रुपयों में कंजूसी से परिवार चलाने के बावजूद वह पच्चीस पैसे बचा पा रहा था। इसी कारण करतरा में हिरना की शादी की सरगर्मी दिखाने वाला ददा अब शादी का नाम नहीं लेता था।

दाई पंद्रह वर्ष के बाद मां बनने वाली थी। कुछ भी खाने को उसका मन नहीं करता था, खाती भी तो कै हो जाती थी। अक्सर सड़क से जाने वाले खोमचे वाले को बुलाकर पानी-पुड़ी खरीद लेती। हिरना समझ गई थी कि दाई उसे पानी-पुड़ी खिलाना नहीं चाहती। कभी-कभार खिला भी देती तो उसके चेहरे पर नाखुशी झलकती थी। ददा भी अपनी सारी कमाई दाई की फरमाइशों पर खर्च

करने लगे थे। दाई के लिए वह रोज फल लाता। कहने के लिए कहा करता कि वह भी फल खाए। परंतु हिरना इनकार कर देती थी। हिरना ने महसूस किया कि उसका ददा भी तेजी से बदल रहा है। पहले केवल उससे प्यार जताने वाला ददा अब दाई का बेहद ध्यान रखने लगा था। हिरना के लिए दाई-ददा का प्यार बीते दिनों की याद बन गया था। हिरना अनुभव कर रही थी कि, *“ददा बदल गए थे, मैं बदल गई थी, दाई बदल गई थी। सब के बदलने के कारण अलग-अलग थे लेकिन बदले सभी थे।”* ^{०५}

दाई के पानी-पुड़ी खाने का समय होता तो हिरना बाहर निकल जाती थी। पास-पड़ोस की लड़कियों से उसकी दोस्ती हो गई थी। उनमें सुशीला उसे भा गई थी। सुशीला स्वतंत्र विचारों की स्वतंत्र लड़की थी। माँ-बाप का रौब वह मानती थी। माँ-बाप से छुपकर वह चोरी-चोरी बाजार में काम करती थी और उन पैसों से ऐश करती थी। सुशीला के कहने पर ही हिरना भी उस के साथ भड़भूँजे की दुकान पर काम करने लगी। जो भी पैसे मिलते मस्ती में उड़ा देती थी। सुशीला की खासियत उसके स्वभाव में उतरने लगी थी। दाई-ददा के सामने यह बात खुल गई। दाई ने हंगामा किया पर ददा चुप रह गए थे। परिवार के तीनों प्राणियों के प्यार के अंगारों पर मानो राख की पतें चढ़ गई थी। हिरना के संपर्क में सियाराम आ गया तो उसने उसे अपने जाल में फाँस लिया। सिया धनी बाप का बेटा था पर दिखने में बेवकूफ दिखाई देता था। हिरना को उसके पैसों का आकर्षण था। संपर्क बढ़ता गया और हिरना को पेट रह गया। दाई-ददा को पता चला तो घर में हंगामा खड़ा हो गया। हिरना ने बात समझाई कि सिया ने उसे शादी का वचन दिया है और वह घरजमाई भी बनने को तैयार है, तो दोनों शांत हो गए। हिरना सिया से शादी का आग्रह करती और वह कोई न कोई बहना बनाकर टालता रहता। एक दिन हिरना को पता चला कि वह घर से गायब हो गया है तो अत्याधिक चिंतित हो जाती है। इधर दाई एक लड़के को जन्म देकर मर जाती है और हिरना पर एक और जिम्मेदारी आ पड़ती है। दाई की मौत के बाद ददा की गैरजिम्मेदाराना हरकतें बढ़ने लगी, वह शराब भी पीने लगा था। हिरना को लगता है कि वह आत्महत्या करके अपने आप को खत्म कर दें पर उसमें साहस नहीं था। मुरारी दाऊ दानीपुर मुन्सीपाल्टी के चुनाव में अध्यक्ष

पद के उम्मीदवार बने। उनके विरोध में लाला रामदास चुनाव में खड़े थे। जो पिछली बार भी मुन्सीपाल्टी के अध्यक्ष थे। दाऊ दुःखमोचन सिंह के बड़े बेटे पर मुरारी दाऊ से बदला लेने की सनक सवार हो गई। वे दानीपुर अपने मित्र केशरसिंह के यहां ठहरे। मुरारी दाऊ भाषण करने लगते तो हुल्लड मच जाती, उन पद पत्थर और जूते फेंके जाते, उनकी सथा नहीं हो पाती थी। बड़े बाबू उन पर गंदे-गंदे आरोप करते। परचों में मुरारी दाऊ के साथ गंदी औरतों की तस्वीर छाप कर लोगों में बांटते। इन कामों में बड़े बाबू ने पानी की तरह पैसा बहाया फिर भी मुरारी बाबू तीन हजार वोट ज्यादा लेकर जीत गए। चुनाव में लाला रामदास की हार एक तरफ से दाऊ दुःखमोचन की हार थी। इस सदमें को वे बरदाश्त नहीं कर पाए और बीमार हो गए। इसी बीमारी में उनका अंत हुआ।

इधर हिरना ने एक लड़के को जन्म दिया पर ददा ने उसे स्पर्श तक नहीं किया। ददा अब घर की चिंता नहीं करते थे। पड़ोसियों ने ही इन दिनों हिरना की देखभाल की। ददा ने एक रात शराब के नशे में हिरना को बताया कि सिया उसे बाजार में मिला था, उसने सिया की खूब मरम्मत की है। उसी रात सिया हिरना और अपनी संतान को मिलने आता है। जिस तरह शहर में जुझते हुए हिरना का परिवार टूटा रहा था, उसी तरह गांव में दाऊ का परिवार भी टूटा रहा था। दाऊ की मौत के बाद बड़े बाबू अलग होकर नीमतरा चले गए। छोटे बाबू अपनी बहू को लेकर गांव चले गए। और मंझले बाबू की दिलचस्पी खेती में होने से वे करतरा में रहे। परिवार अंततः टूट गए। इस टूटन के साथ ही उपन्यास की कथा समाप्त होती है।

उपन्यास की कथा करतरा और दानीपुर में घटित होती है। उसी तरह यह कथा जिस प्रकार करतरा और दानीपुर के दाऊ के प्रतिवद्धिंता की कथा है और हिरना के परिवार की भी कथा है। दोनों कथाएं समाज चलती है। उपन्यास में भौगोलिक परिवेश की अपेक्षा सामाजिक परिवेश का चित्रण अधिक मुखर है। इसी कारण यह उपन्यास आंचलिक की अपेक्षा सामाजिक अधिक लगता है। उपन्यास में अशिक्षा, अज्ञान, अंधविश्वास, बेरोजगारी, पारस्परिक ईर्ष्या-व्देष आदि का यथार्थ चित्रण हुआ है।

उपन्यास समस्या प्रधान होने से पात्रों की अपेक्षा समस्याएं अधिक उभरी है। उपन्यास का प्रमुख पात्र हिरना

सावरी है। पर वह उपन्यास की नायिका नहीं है। हिरना के अलावा दाऊ दुखमोचन सिंह, मुरारी दाऊ, ददा रामदरस और दाई रामकली के चरित्र उभर पाए हैं। उपन्यासकार का उद्देश्य भी चरित्र-चित्रण नहीं है। छत्तीसगढ़ की समस्याओं का उद्घाटन लेखन का लक्ष्य है। 'हिरनी सांवरी' छत्तीसगढ़ के जीवन पर विशुद्ध हिंदी में लिखा हुआ उपन्यास है। बीच-बीच में छत्तीसगढ़ शब्दों का प्रयोग किया गया है। इसे लेकर छत्तीसगढ़ में बहुत बड़ा विवाद खड़ा हुआ था। लेखक ने इस संबंध में लिखा है..... "रेणु ने पुर्णिया जिले की भाषा प्रायः शुद्ध रूप में लिखी तो लोगों ने उसे बोझिल कह दिया। अब मैंने उपन्यास में एक ऐसी भाषा रखी जिसमें हिंदी ज्यादा छत्तीसगढ़ी कम है तो उसे भी गैर जिम्मेदारी का काम कहकर दुत्कार दिया गया।" ०६ आंचलिक उपन्यास की भाषा को लेकर उनका मत है कि, "सफल या अच्छी भाषा वही है जो बिना किसी हिचक के अच्छे शब्दों को जहां से और जब भी हो सके, अपने लिए उठा ले। कभी-कभी शब्द अपने मूल रूप में ही हिंदी में ही खप सकते हैं और कभी उन में किंचित परिवर्तन की आवश्यकता भी अनुभव की जा सकती है।" ०७

सारांश :

मनहर चौहान ने अपने उपर्युक्त मतों के अनुरूप छत्तीसगढ़ के बोलचाल के शब्दों साथ अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया है, कभी अपने मूल रूप में तो कभी किंचित परिवर्तन के साथ। अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग शहरी प्रभाव के कारण हो सकता है। लेखक के उपर्युक्त मत से सहमत होते हुए भी यह कहना आवश्यक लगता है कि स्थानीय शब्दों के बावजूद उपन्यास की भाषा को वे आंचलिक भाषा का रूप नहीं दे पाए हैं। मात्र स्थानीय बोली के शब्दों के प्रयोग से भाषा में आंचलिकता नहीं आ पाती। लोकोक्तियों, मुहावरों तथा लोकगीतों का समावेश भी आवश्यक होता है जब कि इस उपन्यास में उसका अभाव दिखाई देता है। कुल मिलाकर 'हिरना सांवरी' प्रेमचंद की परंपरा का सामाजिक उपन्यास अधिक लगता है, आंचलिक कम।

संदर्भ संकेत :

- ०१) हिरना सावरी : मनहर चौहान, उमेश प्रकाशन, नाथ मार्केट दिल्ली। १९६०। पृष्ठ क्रमांक ०७।
- ०२) हिरना सावरी : मनहर चौहान, उमेश प्रकाशन, नाथ मार्केट दिल्ली। १९६०। पृष्ठ क्रमांक ०६।
- ०३) हिरना सावरी : मनहर चौहान, उमेश प्रकाशन, नाथ मार्केट दिल्ली। १९६०। पृष्ठ क्रमांक ०७।
- ०४) हिरना सावरी : मनहर चौहान, उमेश प्रकाशन, नाथ मार्केट दिल्ली। १९६०। पृष्ठ क्रमांक ७६।
- ०५) हिरना सावरी : मनहर चौहान, उमेश प्रकाशन, नाथ मार्केट दिल्ली। १९६०। पृष्ठ क्रमांक १५४।
- ०६) हिरना सावरी : मनहर चौहान, उमेश प्रकाशन, नाथ मार्केट दिल्ली। १९६०। पृष्ठ क्रमांक ४४।
- ०७) हिरना सावरी : मनहर चौहान, उमेश प्रकाशन, नाथ मार्केट दिल्ली। १९६०। पृष्ठ क्रमांक १५८।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

- ०१) हिंदी आंचलिक उपन्यास सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ : विमल शंकर नागर, प्रेरणा प्रकाशन मुरादाबाद १९८६
- ०२) हिंदी आंचलिक उपन्यास उद्भव और विकास: डॉ. इंदिरा जोशी, देवनागर प्रकाशन जयपुर १९८४।
- ०३) आंचलिकता और हिंदी उपन्यास : डॉ. नगीना जैन, अक्षर प्रकाशन दिल्ली १९७६।
- ०४) हिंदी के आंचलिक उपन्यास : डॉ. मृत्युंजय उपाध्याय, चित्रलेखा प्रकाशन इलाहाबाद १९८६।
- ०५) आंचलिक उपन्यास संवेदना और शिल्प : ग्यानचंद गुप्त, अभिनव प्रकाशन दिल्ली १९७५।
- ०६) हिंदी उपन्यास एक सर्वेक्षण : महेंद्र चतुर्वेदी नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली १९६२।